मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।इन्द्रः। गायत्री, १०-१२ विराट्।

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत।सखायः सोमपाव्ने॥ ७.०३१.०१

सखायः- सुहृदः। वः- यूयम्। सोमपाव्ने- रसानुभवकराय। हर्यश्वाय- प्राणतुरगसम्पन्नाय। इन्द्राय- परमेश्वराय। मादनम्- हर्षकरं साम। प्र- प्रकर्षेण। गायत- कीर्तयत ॥१॥

शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः।चकृमा सत्यराधसे॥ ७.०३१.०२

यथा। सत्यराधसे- सत्यसंसिद्धये। नरः- मनुष्या वयम्। चकृम- स्तुतिं कुर्मः। तथा। सुदानवे- सुदात्रे। द्युक्षम्- दिव्यम्। उक्थम्- मन्त्रम्। शंस- ब्रूहि ॥२॥

त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो।त्वं हिरण्ययुर्वसो॥ ७.०३१.०३

वसो- शरण्य। इन्द्र। शतक्रतो- अनन्तप्रज्ञ। त्वम्। नः- अस्माकम्। गव्युः- गोकामः। वाजयुः- अन्नकामः। हिरण्ययुः- सुवर्णकामः ॥३॥

वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन्।विद्धी त्वस्य नो वसो॥ ७.०३१.०४

इन्द्र। वयम्। त्वायवः- त्वत्कामाः। वृषन्- वर्षक। अभि प्र णोनुमः- वन्दामहे। वसो- शरण्य। नः- अस्माकम्। अस्य- एतत् स्तोत्रम्। विद्धि- बुद्ध्यस्व ॥४॥

मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे।त्वे अपि क्रतुर्मम॥ ७.०३१.०५

नः- अस्मान्। निदे वक्तवे- निन्दकाय। अराव्णे- अदात्रे। अर्यः- आर्यशीलः सन्। मा कार्षीः। अपि- अपि च। त्वे- त्वयि। मम- मे। क्रतुः- प्रज्ञा अस्ति ॥५॥

त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन्।त्वया प्रति ब्रुवे युजा॥ ७.०३१.०६

वृत्रहन्- आवरणबाधक। त्वम्। वर्म- कवचम्। असि- भवसि। सप्रथः- पृथुः। पुरोयोधः- अस्माकं पुरतोऽस्मदर्थं शत्रुभिर्योद्धा। त्वया युजा- त्वद्योगेन। प्रति ब्रुवे- शत्रून् प्रतिवदामि ॥६॥

Dr. Rangaji

WEBOLIM

महाँ उतासि यस्य तेऽनु स्वधावरी सहः। मम्नाते इन्द्र रोदसी॥ ७.०३१.०७

उत- अपि च। इन्द्र। महान्- महात्मा। असि- भवसि। यस्य। ते- तव। सहः- बलम्। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। स्वधावरी- अन्नवत्यौ। अनु मम्नाते- अनुमन्येते॥७॥

तं त्वा मरुत्वती परि भुवद्वाणी सयावरी। नक्षमाणा सह द्युभिः॥ ७.०३१.०८

तम्- तादृशम्। त्वा- त्वाम्। मरुत्वती- प्राणबलसम्पन्ना। सयावरी- सहगन्त्री। वाणी- वाक्। द्युभिः- दीप्तिभिः। सह। नक्षमाणा- व्यापनशीला। परि- परितः। भुवत्- भवतु॥८॥

ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो भुवन्दस्ममुप द्यवि। सं ते नमन्त कृष्टयः॥ ७.०३१.०९

दस्मम्- दर्शनीयम्। त्वा- भवन्तम्। द्यवि- चित्ताकाशे। ऊर्ध्वासः- उत्कृष्टाः। इन्दवः- हृदयस्पर्शिनो रसाः। अनु भुवन्- अनुभवन्तु। कृष्टयः- प्रजाः। ते- त्वाम्। सं नमन्त- सम्यक् प्रणमन्ति॥९॥

प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः॥ ७.०३१.१०

वः- यूयम्। महे- महते। महिवृधे- महतां वर्धयित्रे। प्रचेतसे- प्रकर्षचेतनाय। प्र भरध्वम्- धारयत। सुमतिम्- शोभनबुद्धिम्। प्र- प्रकर्षेण। कृणुध्वम्- कुरुत। चर्षणिप्राः- प्रजापूरकः सन्। पूर्वीः विशः- सनातनधर्मस्थाः प्रजाः। प्र चर- अभिगच्छ॥१०॥

उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः।

तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः॥ ७.०३१.११

धीराः- धारणाकुशलाः। उरुव्यचसे- विस्तीर्णाय। महिने- महात्मने। इन्द्राय- परमेश्वराय। सुवृक्तिं ब्रह्म- सुष्ठु उक्तं मन्त्रम्। विप्राः- मेधाविनः। जनयन्त- ससृजुः। तस्य। व्रतानि- नियतीर्धर्मान्वा। धीराः- धारणाकुशलाः। न। मिनन्ति- हिंसन्ति॥११॥

Dr. Rangaji

WEBOLIM

इन्द्रं॒ वाणी॒रनु॑त्तमन्युमे॒व स॒त्रा राजा॑नं दधिरे॒ सह॑ध्यै। हर्य॑श्वाय बर्हया॒ समा॒पीन्॥ ७.०३१.१२

अनुत्तमन्युम्- अबाधितक्रोधम्। एव। सत्रा- सह। राजानम्- स्वामिनम्। इन्द्रम्। वाणीः- वाचः। सहध्यै- सहनशीलप्राप्त्यर्थम्। दधिरे। हर्यश्वाय- प्राणाश्वायेन्द्राय। आपीन्- बन्धून्। सम्- सम्यक्। बर्हय-उत्साहय ॥१२॥

Dr. Ranganji

WEBOLIM